एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषक भाई बारिश, धुंध और पाले से फसलों को बचाये

(*डॉ. अनिल कुमार पाल एवं डॉ. सोमेन्द्र नाथ)

विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, सोहांव, बलिया, उत्तर प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: anilkumarpal500@gmail.com

वैज्ञानिकों की सलाह

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर बारिश की संभावना हो तो किसानो को खड़ी फसलों पर सिंचाई तथा किसी भी प्रकार का छिडकाव नहीं करना चाहिए। मौसम को ध्यान में रखते हुए किसान सरसों की फसल में चेपा कीट की नियमित निगरानी करते रहें। अधिक कीट होने पर इमिडाक्लोप्रिड़ दवा का 0.25 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव आसमान साफ होने पर करें।

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं :– वैज्ञानिकों के मुताबिक चने की फसल में फली छेदक कीट की निगरानी के लिए फीरोमोन प्रपंश 3–4 प्रपंश ट्रैप्स प्रति एकड़ उन खेतों में लगाएं जहां पौधों में 10–15 फीसदी फूल खिल गए हों। वहीं कीटों के नियंत्रण के लिए खेत में और उसके आसपास टी आकार के पक्षी पर्च स्थापित करें। गोभीवर्गीय फसल में हीरा पीठ इल्ली, मटर में फली छेदक तथा टमाटर में फल छेदक की निगरानी के लिए फीरोमोन प्रपंश दर 3–4 प्रपंश प्रति एकड़ खेतों में लगाएं।

कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती की अगेती फसल के लिए करें ये तैयारी :– इस समय किसान कद्दूवर्गीय सब्जियों की अगेती फसल के लिए यह तैयारी कर सकते हैं। ऐसी सब्जियों के अगेती फसल के पौध तैयार करने के लिए बीजों को छोटी पालीथीन के थैलों में भर कर पाली घरों में रखें। इस मौसम में तैयार बंदगोभी, फूलगोभी, गांठगोभी आदि की रोपाई मेडों पर कर सकते हैं। यही नहीं इस मौसम में पालक, धनिया, मेथी की बुवाई भी कर सकते हैं। पत्तों के बढकर के लिए 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ की दर से छिडकाव कर सकते हैं।

आलू और टमाटर को झुलसा रोग से बचाएं :– कृषि विज्ञान केन्द्र के अनुसार इस मौसम में आलू तथा टमाटर में झुलसा रोग की निरंतर निगरानी करते रहें। लक्षण दिखाई देने पर कार्बंडिजम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी या डाईथेन–एम–45 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। वहीं प्याज की समय से बोई गई फसल में थ्रिप्स के आक्रमण की निरंतर निगरानी करते रहें। प्याज में परपल ब्लोस रोग की निगरानी करते रहें। रोग के लक्षण पाए जाने पर डाएथेन–एम–45 का छिडकाव करने की सलाह दी जाती है।

मटर की फलियों की संख्या में वृद्धि के लिए ये करें :– मटर में फलियों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि मटर का अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार मटर की फसल पर 2 फीसदी यूरिया के घोल का छिडकाव करें, जिससे मटर की फल्लियों की संख्या में वृद्धि होगी।

फसलों को कोहरे, शीतलर, पाले से बचाएं

शीत लहर एवं पाले से फसल की सुरक्षा के उपाए पौधशालाओं के पौधों एवं सीमित क्षेत्र वाले उद्यानोंध्नकदी सब्जी वाली फसलों में भूमि के तापमान को कम न होने देने के लिये फसलों को टाट, पोलीथिन अथवा भूसे से ढक दें। वायुरोधी टाटियां, हवा आने वाली दिशा की तरफ यानि उत्तर–पश्चिम की तरफ बांधे। नर्सरी, किचन गार्डन एवं कीमती फसल वाले खेतों में उत्तर पश्चिम की तरफ टाटियां

बांधकर क्यारियों के किनारों पर लगायें तथा दिन में पुनःहटाएं। जब पाला पडने की संभावना हो तब फसलों में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। सिंचाई जब ही करें जब आसमान साफ हो। जिन दिनों पाला पडने की संभावना हो उन दिनों फसलों पर घुलनशील गंधक 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) में घोल बनाकर छिडकाव करें। ध्यान रखें कि पौधों पर घोल की फुहार अच्छी तरह लगे। छिडकाव का असर दो सप्ताह तक रहता है। यदि इस अवधि के बाद भी शीत लहर व पाले की संभावना बनी रहे तो छिडकाव को 15–15 दिन के अंतर से दोहरातें रहें या थायो यूरिया 500 पी.पी.एम. (आधा ग्राम) प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें। पेड़ दीर्घकालीन उपाय के रूप में फसलों को बचाने के लिए खेत की उत्तरी–पश्चिमी मेंडों पर तथा बीच–बीच में उचित स्थानों पर वायु अवरोधक पेड़ जैसे शहतूत, शीशम, बाबुल आदि लगा दिए जाए तो पाले और ठंडी हवा के झौंको से फसल का बचाव हो सकता है।

रासायनिक उपचारः– पाला पडने की संभावना होने पर फसलों पर गंधक का तेजाब 1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करना चाहिए इसके लिए 8 लीटर गंधक तेजाब को 1000 लीटर पानी में घोलकर 01 हेक्टेयर क्षेत्रफल में छिडकाव करना चाहिए। ध्यान रखा जाए कि पौधों पर घोल का छिडकाव अच्छी तरह किया जाय। इस छिडकाव का असर 02 सप्ताह तक रहता है, यदि इस अवधि के बाद भी शीतलहर एवं पाले की संभावना बनी रहे तो गन्धक के तेजाब को 15–15 दिन के अंतर से छिडकाव चाहिए। सल्फर 80 प्रतिशत घुलनशील पाउडर की 03 किलोग्राम मात्रा 01 एकड़ में छिडकाव करने के बाद सिंचाई की जाए अथवा सल्फर 80 प्रतिशत घुलनशील पाउडर को 40 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव किया जाए।

पाले से बचाव के दीर्घकालीन उपाय :– फसलों को पाले से बचाने के लिए खेत के उत्तर–पश्चिम मेड़ पर तथा बीच–बीच में उचित स्थान पर वायु रोधक पेड़ जैसे–शहतूत, शीशम, बबूल, तथा जामुन आदि के लगाए जाएं तो सर्दियों में पाले व ठंडी हवा के झोकों से भी बचाव हो सकता है।

टमाटर और आलू को झुलसा रोग से बचाएं :– शीतलहर को देखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों ने कहा है कि हवा में अधिक नमी के कारण आलू तथा टमाटर में झुलसा रोग आने की संभावना है। इसलिए फसल की नियमित रूप से निगरानी करें। लक्षण दिखाई देने पर कार्बंडिजम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी या डाईथेन–एम–45 को 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

पछेती गेहूं की बुवाई शीघ्र करें किसान :– तापमान को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह है कि वे पछेती गेहूं की बुवाई अतिशीघ्र कर दें। बुवाई से पूर्व बीजों को थायरम 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीज की दर से उपचारित करें। जिन खेतों में दीमक का प्रकोप हो उनमें किसान क्लोरपाईरिफास (20 ईसी) 5.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से पलेवा के साथ या सूखे खेत में छिडक दें। नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश उर्वरकों की मात्रा 100, 60 व 40 किग्रा प्रति हेक्टेयर होनी चाहिए।

सब्जियों और फल–फूलों की ऐसे करें सुरक्षा :– इस मौसम में किसान सब्जियों की निराई–गुड़ाई करके खरपतवारों को नष्ट करें। सब्जियों की फसल में सिंचाई करें तथा उसके बाद उर्वरकों का बुरकाव करें। इस मौसम में मिलीबग के बच्चे जमीन से निकलकर आम के तनों पर चढ़ेंगे, इसको रोकने के लिए किसान जमीन से 5 मीटर की ऊंचाई पर आम के तने के चारों तरफ 25 से 30 से.मी. चौड़ी अल्काथीन की पट्टी लपेटें। तने के आस–पास की मिट्टी की खुदाई करें जिससे उनके अंडे नष्ट हो जाएंगे। आर्द्रता के अधिक रहने की संभावना को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह है कि वे अपनी गेंदे की फसल में पुष्प सडन रोग के आक्रमण की निगरानी करते रहें।